**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2024; 6(SP-6): 131-134
Received: 13-04-2024
Accepted: 14-05-2024

**Saroj Devi**
CPSM College of Education, Gurgaon, Haryana, India

**Corresponding Author:**
**Saroj Devi**
CPSM College of Education, Gurgaon, Haryana, India

***Globalization and Sustainable Development: Interdisciplinary Perspectives (GSD IP-24) (Conference proceedings of DPG DEGREE College)***

# सामाजिक न्याय और समता (इक्विटी)

**Saroj Devi**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2024.v6.i6b.1223

## सारांश

सामाजिक न्याय और इक्विटी ,समताद्ध के महत्व को समझने के लिए आवश्यक है कि हम संप्रत्यय के अंदर की भूमिका, महत्व और उनके अंतर निहित सिद्धांतों को समझे। सामाजिक न्याय का मतलब है कि समाज में समानता और न्याय का निरंतर लक्ष्य रखना। यह न केवल समाज की संरचना को सुधारता है, बल्कि वहां के लोगों को भी एक बेहतर और समृद्ध वातावरण प्रदान करता है। जब हम सामाजिक न्याय की बात करते हैं तो हमारे सामने न्याय पूर्ण समाज का दृश्य आता है। सामाजिक न्याय का अर्थ एक ऐसे न्यायपूर्ण समाज की स्थापना से है जिसमें सभी लोगों को समान अधिकार, अवसर और उपचार मिलना चाहिए। सामाजिक न्याय का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो विविधता के होते हुए भी सभी सदस्यों को समान अवसर प्रदान करता हो। समाज में रहने वाले सभी सदस्यों को बिना उनकी विकलांगता, जातीयता, आयु, धर्म, भाषा, लिपि, समुदाय आदि देखे उनको समान अवसर प्रदान करना ही सामाजिक न्याय कहलाता है। बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत विकास के लिए समान अवसर प्रदान किया जाए। किसी भी व्यक्ति विशेष को उसकी विभिन्नता को कारण मानकर उसके विकास के लिए आवश्यक सामाजिक परिस्थितियों से वंचित नहीं रखना चाहिए। सामाजिक न्याय के साथ जब हम हिस्सेदारी या साझेदारी की बात करते हैं तब कहीं ना कहीं हम मानवाधिकारों को केंद्र में रखते हैं। इसके विपरीत इक्विटी ने समानता को और गहरा बनाया है। यह ना केवल समानता का मानक है बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक परिपेक्ष्य से समान व्यवहार करने का सिद्धांत भी है। सामाजिक न्याय और इक्विटी के अन्य सिद्धांतों में प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन, उत्पादक अधिकारों का संरक्षण, सामाजिक समरसता और विकास के लिए संजीवनी आदि शामिल है। सामाजिक न्याय और इक्विटी के महत्व को समझने के लिए हमें समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे की शिक्षा, आर्थिक संरचना, राजनीतिक व्यवस्था और सांस्कृतिक प्रथाओं को अध्ययन करने की आवश्यकता होती है । इसके लिए हमें समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और व्यक्तियों कीf धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझने की आवश्यकता होती है। समाज में सहयोग की भावना, सहजता, सहिष्णुता आदि मानवीय मूल्य होते हैं। इन अवधारणाओं को अपना कर हम समाज को एक बेहतर भविष्य की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं।

**कुटशब्दः** सामाजिक न्याय, समता, शिक्षा, आर्थिक संरचना

## प्रस्तावना

सामाजिक न्याय भी एक प्रकार का न्याय है जो इस विचारधारा पर आधारित है कि सभी लोगों को समान अधिकार मिले समान अवसर मिले, समान शिक्षा का प्रावधान हो, समान उपचार मिले। हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि सामाजिक न्याय एक ऐसी विचारधारा है जो हमेशा निष्पक्षता की मांग रखता है। डॉ भीमराव अंबेडकर की सामाजिक न्याय की अवधारणा सभी मनुष्यों की स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के लिए है। वह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था के पक्ष में थे जो सभी क्षेत्रों में मनुष्य वह मनुष्य के बीच सही संबंधों पर आधारित हो और वह किसी भी प्रकार के पाखंड अन्याय और शोषण को स्वीकार नहीं करते थे। शैक्षिक दृष्टि से यदि हम देखते हैं तो समानता और समता का अर्थ बराबरी ही होता है। फिर भी समानता और समता मे मुख्य अंतर यह है कि समानता का अर्थ है सभी को समान संसाधन या अवसर दिए जाए जबकि समता का अर्थ है कि सभी की ज़रूरतें और परिस्थितियां अलग-अलग हैं और समान परिणाम तक पहुंचाने के लिए उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाये और अवसर दिए जाने चाहिए। समता से अभिप्राय व्यक्तिगत आवश्यकताओं और परिस्थितियों को पहचानना और उनका समाधान करना अर्थात व्यक्तियों को सफल होने के लिए जो चाहिए वह प्रदान करके निष्पक्षता और न्याय का परिचय देना ही समता कहलाता है। व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधार पर अनुरूप समर्थन, आवास और निष्पक्षता ही समता की परिभाषा है। अब शिक्षा की बात करते हैं शिक्षा को किसी एक परिभाषा में बांधना असंभव है।

यह जीवन पर्यंत चलने वाली बहुमुखी प्रक्रिया है। सर्वांगीण विकास का आधार है और सकारात्मक परिवर्तन के लिए एक मजबूत हथियार है। आर्थिक संरचना का तात्पर्य है वह सुविधा और सेवा जो किसी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है बुनियादी सुविधाएं। शिक्षा, स्वास्थ्य, नागरिक सेवाएं, यातायात, ऊर्जा, संचार आदि का बेहतर होना आर्थिक संरचना की मजबूती का सूचक है।

**सामाजिक न्याय**

सामाजिक न्याय शब्द एक व्यापक अर्थ को लिए हुए है। सामाजिक न्याय का तात्पर्य संसाधनों, अवसरों और विशेष अधिकारों के उचित विभाजन से है सामाजिक न्याय इस बात पर जोर देता है कि समाज अपने सामाजिक संसाधनों को किस प्रकार विभाजित करता है। सामाजिक न्याय का तात्पर्य समाज में संसाधनों, अवसरों और विशेषाधिकारों के निष्पक्ष और न्यायसंगत विभाजन से है। मूल रूप से एक धार्मिक अवधारणा, इसे आर्थिक लाभों तक पहुंच प्रदान करने वाली सामाजिक संस्थाओं के न्यायसंगत संगठन के रूप में अधिक शिथिल रूप से अवधारणाबद्ध किया गया है। इसे कभी-कभी "वितरणात्मक न्याय" भी कहा जाता है।

**सामाजिक न्याय के मुख्य सिद्धांत** [1]

हालाँकि सामाजिक न्याय की कोई एक परिभाषा नहीं है, अधिकांश दृष्टिकोण समावेशन और निष्पक्षता के व्यापक लक्ष्यों को साझा करते हैं। उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वे एक न्यायपूर्ण समाज के लिए नैतिक सिद्धांतों का एक सेट स्थापित करते हैं।

**इन सिद्धांतों में शामिल हो सकते हैं**

**पहुँच**

सामाजिक वस्तुओं तक समान पहुंच सामाजिक न्याय के सबसे बुनियादी सिद्धांतों में से एक है। इसका मानना है कि समाज के संसाधन सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होने चाहिए। उदाहरण के लिए, कई सामाजिक न्याय सिद्धांतकारों का मानना है कि लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार के अवसरों तक समान पहुंच मिलनी चाहिए। लोक सेवक यह सुनिश्चित करके इस सिद्धांत को कायम रख सकते हैं कि हर किसी की इन संसाधनों तक पहुंच हो।

**हिस्सेदारी**

समानता वह सिद्धांत है कि पिछले किसी भी अन्याय या प्रणालीगत भेदभाव के बावजूद लोगों को सफल होने के समान अवसर मिलने चाहिए। इसका मतलब यह हो सकता है कि संसाधनों को इस तरह से वितरित किया जाता है जो वंचित समुदायों या लोगों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करता है।
केंट राज्य ऑनलाइन। "सामाजिक न्याय के पाँच सिद्धांत।"

**विविधता**

विविधता सिद्धांत है कि सरकार और व्यापारिक नेताओं को मोटे तौर पर उन समुदायों का प्रतिनिधि होना चाहिए जिनकी वे सेवा करते हैं। इसका मतलब यह है कि सत्ता के पदों पर न केवल महिलाएं और अश्वेत लोग होने चाहिए, बल्कि सार्वजनिक संस्थानों में अल्पसंख्यक समुदायों का भी समान प्रतिनिधित्व होना चाहिए। नीतिगत स्तर पर, यह सिद्धांत भेदभाव या कई भाषाओं में संसाधन उपलब्ध कराने पर प्रतिबंध लगा सकता है।

**भाग लेना**

भागीदारी वह सिद्धांत है कि महत्वपूर्ण निर्णय लेने में समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवाज उठानी चाहिए। कई समाजों में, सार्वजनिक नीतियां शक्तिशाली लोगों के एक छोटे समूह द्वारा निर्धारित की जाती हैं, उन समुदायों से परामर्श किए बिना जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। इसका समुदाय के एक बड़े हिस्से को बाहर करने का अनपेक्षित प्रभाव हो सकता है।
सार्वजनिक नीति निर्माता अल्पसंख्यक समुदायों के अधिवक्ताओं से परामर्श करके और उनकी जरूरतों पर विचार करके इस कमी को दूर कर सकते हैं।

**मानव अधिकार**

सामाजिक न्याय का अंतिम सिद्धांत, और संभवतः सबसे मौलिक, मानवाधिकार है। अंतरात्मा की स्वतंत्रता जैसे राजनीतिक अधिकारों के अलावा, इसमें पुलिस दुर्व्यवहार से मुक्ति और किसी के प्रजनन अधिकारों और शारीरिक स्वायत्तता के सम्मान की भी आवश्यकता होती है। [1]

**समानता और न्याय में भी अंतर है**

समानता एक प्रकार का न्याय है। वैसे तो न्याय की दृष्टि में सब समान है। लेकिन समाज खुद में समान नहीं होता। सामाजिक, आर्थिक और भी कई तरह से चीजें समान नहीं होती होती हैं। उदाहरण के लिए अगर स्कूल आपके घर के पास है और मेरे घर से दूर तो भले ही हमारे बच्चों को शिक्षा सामान मिल सके लेकिन हम दोनों का खर्च समान नहीं होगा। इसलिए मुझे ज्यादा खर्च करना पड़ेगा सामान एजुकेशन के लिए। यह सब चीज समाज को असमान बनाती हैं। हेलो यहां यह समझने की जरूरी है असमानता भी एक प्रकार का न्याय है यहां यह समझना भी जरूरी है की असमानता भी एक प्रकार का न्याय है जैसे चोरी के अपराध में एक वयस्क और अवयस्क को समान सजा नहीं दी जानी चाहिए। यह असमानता भी जरूरी है।

**समता** [2]

समता व्यक्तिपरक तथा नैतिक निर्णय है, जबकि समानता का अभिप्राय आय या शिक्षा के वितरण के प्रतिरूप में है। यह (समानता) अधिक वस्तुपरक तथा विवरणात्मक है और इसको मापा जा सकता है, परन्तु असमानता की स्थिति में समता या औचित्य का मूल्यांकन केवल मूल्य निर्णय के प्रति आग्रह द्वारा ही किया जा सकता है। सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन में समतावाद एक स्थापित लेकिन विवादित अवधारणा है। समतावाद का सिद्धांत सभी मनुष्यों के समान मूल्य और नैतिक स्थिति की संकल्पना पर बल देता है। समतावाद का दर्शन ऐसी व्यवस्था का समर्थन करता है जिसमें सम्पन्न और समर्थ व्यक्तियों के साथ-साथ निर्बल, निर्धन और वंचित व्यक्तियों को भी आत्मविकास के लिए उपयुक्त अवसर और अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हो सकें। समतावाद समाज के सब सदस्यों को एक ही शृंखला की कड़ियाँ मानता है जिसमें मज़बूत कड़ियाँ कमज़ोर कड़ियों की हालातसे अप्रभावित नहीं रह सकतीं। उसका दावा है कि जिस समाज में भाग्यहीन और वंचित मनुष्य दुःखमय, अस्वस्थ और अमानवीय जीवन जीने को विवश हों, उसमें भाग्यशाली और सम्पन्न लोगों को व्यक्तिगत उन्नति और सुख समृद्धि प्राप्त करने की असीम स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। वस्तुतः समतावाद स्वतंत्रता और समानता में सामंजस्य स्थापित करना चाहता है। इसे एक विवादितसंकल्पना इसलिए कहा गया है कि समानता के कई स्वरूप हो सकते हैं और लोगों के साथ समान व्यवहार करने के भी अनेक तरीके हो सकते हैं। जॉन रॉल्स को भी एक महत्त्वपूर्ण समतावादी विचारक माना जाता है। जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक अ थियरी ऑफ़ जस्टिस में न्याय के दो सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं। उनके पहले सिद्धांत को समान स्वतंत्रता का सिद्धांत कहते हैं जिसमें उन्होंने तर्क दिया है कि प्रत्येक को सबसे विस्तृत स्वतंत्रता का ऐसा समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए जो दूसरों की वैसी ही स्वतंत्रता के साथ निभा सके। उनके दूसरे सिद्धांत के अनुसार सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ इस ढंग से व्यवस्थित की जाएँ कि (क) इनसे हीनतम स्थिति वाले लोगों को अधिकतम लाभ हो (भेदमूलक सिद्धांत) और (ख) ये विषमताएँ उन पदों और स्थितियों के साथ जुड़ी हों जो अवसर की उचित समानता की शर्तों पर सबके लिए सुलभ हो (अवसर की उचित समानता का सिद्धांत)। रॉल्स ने अपने सिद्धांत को एक विशेष पूर्वताक्रम में रखा है। अर्थात् पहले सिद्धांत को दूसरे सिद्धांत की अपेक्षा

प्राथमिकता दी गयी है। दूसरे सिद्धांत में (ख) को (क) पर प्राथमिकता दी गयी है। वस्तुतः यहाँ रॉल्स ने दूसरे लोगों की स्वतंत्रता के लिए किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता में कटौती नहीं की है। परंतु इसके साथ ही उन्होंने इस बात को सुनिश्चित किया है कि समानता के सिद्धांत में किसी भी तरह का हस्तक्षेप तभी किया जा सकता है जब इससे हीनतम स्थिति के लोगों के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदा हो। वस्तुतः यहाँ रॉल्स का समतावाद स्वतंत्रता और समानता में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

समतावाद की एक अन्य अवधारणा सामर्थ्य या कैपेबिलिटी समतावाद की है। इसे अमर्त्य सेन ने प्रस्तुत किया है। इसके अनुसार लोगों की कैपेबिलिटी को बराबर करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। कैपेबिलिटी एक निश्चित तरह के कार्य को करने की क्षमता है। मसलन साक्षरता एक कैपेबिलिटी है और पढ़ना एक कार्य है। एक संसाधन-समतावादी इस बात पर ज़ोर दे सकता है कि जिस क्षेत्र में साक्षरता की कमी है, वहाँ लोगों को किताबें और शैक्षिक सेवा जैसे संसाधन दिये जाने चाहिए। दूसरी ओर सामर्थ्य-समतावादी इस बात पर ज़ोर देंगे कि लोगों को बाहरी संसाधन उपलब्ध कराने से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि लोगों की पढ़ने-लिखने की कैपेबिलिटी या सामर्थ्य अर्थात् आंतरिक क्षमता को बढ़ावा दिया जाये। [3]

**समता और समानता में अन्तर... [4]**

समानता मतलब अपने सभी बच्चों को एक दृष्टि से देखना एक जैसा प्यार करना एक जैसी सुविधाएं देना एक जैसा व्यवहार करना आदि आदि। जबकि समता का मतलब है जिस बच्चे को जिस तरह की सुविधाओं की जरूरत हो जैसे व्यवहार की जरूरत हो जैसे प्यार की जरूरत हो उस हिसाब से वह चीज प्रदान करना।

| क | समता | समानता |
|---|---|---|
| 1 | व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर निष्पक्षता पर ध्यान केंद्रित करता है | सभी के साथ समान व्यवहार करने पर ध्यान केंद्रित करता है |
| 2 | विशिष्ट परिस्थितियों और असमानताओं पर विचार करता है | सभी को समान संसाधन और अवसर प्रदान करता है |
| 3 | प्रणालीगत असमानताओं और बाधाओं को संबोधित करता है | परिस्थितियों की परवाह किए बिना समान व्यवहार प्रदान करता है |
| 4 | समावेशन और समान अवसरों को बढ़ावा देता है | संसाधनों के समान वितरण का लक्ष्य |
| 5 | लक्षित हस्तक्षेप और समायोजन की आवश्यकता है | समान व्यवहार और पहुंच की आवश्यकता है |
| 6 | ऐतिहासिक कमियों को दूर करने का प्रयास करता है | समान शुरुआती बिंदुओं के लिए प्रयास करता है |
| 7 | विविधता को पहचानता है और समायोजित करता है | एकरूपता एवं समानता पर बल देता है |
| 8 | परिणामों और परिणाम-आधारित न्याय पर ध्यान केंद्रित करता है | इनपुट और इनपुट-आधारित न्याय पर ध्यान केंद्रित करता है |
| 9 | पारंपरिक मानदंडों और शक्ति संरचनाओं को चुनौती देता है | निष्पक्षता की पारंपरिक धारणाओं को कायम रखता है |
| 10 | सामाजिक और आर्थिक न्याय को बढ़ावा देता है | औपचारिक समानता और निष्पक्षता को बढ़ावा देता है |

**शिक्षा [5]**

व्यक्ति और समाज के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश काल में बदलाव के साथ शिक्षा की भूमिका और स्वरूप में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। हम जब भी सकारात्मक परिवर्तन की बात करते हैं तो पाते हैं कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए शिक्षा ही एक ऐसा हथियार है जिससे यह संभव हो पता है। सामाजिक परिवर्तन एक स्वाभाविक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। बेशक सामाजिक परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है फिर भी शिक्षा के माध्यम से ही इस परिवर्तन को सकारात्मक परिवर्तन में बदलने की क्षमता विकसित कर सकते हैं। शिक्षा समाज में सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय प्राप्त करने में भी मदद करती है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक स्व-अध्ययन के माध्यम से ज्ञान और जागरूकता को बढ़ावा देती है, जिससे एक बेहतर और ज़्यादा न्यायपूर्ण समाज का निर्माण होता है। शिक्षा का समाज में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा समाज को ज्ञानवान, सशक्त, समृद्ध, और सुखी बनाती है। शिक्षा समाज में सामाजिक न्याय, समानता, एकता, और शांति को बढ़ावा देती है। शिक्षा समाज में गरीबी, अशिक्षा, अज्ञानता, अन्धविश्वास, और अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने में मदद करती है। शिक्षा के बिना हमारा जीवन अधूरा लगता है। शिक्षा के बिना हम ज्ञान, समझ और सोचने की क्षमता से वंचित रह जाते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जो हमें समझने और सीखने में मदद करता है और हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है।इसी प्रकार शिक्षा भी व्यक्ति को स्वतंत्र बनाने में सहायक होती है। जब कोई व्यक्ति पर्याप्त रूप से शिक्षित होता है, तो उसे अपनी आजीविका के लिए किसी और पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। वो अपने लिए कमाने और अच्छा जीवन जीने के लिए आत्मनिर्भर होता है।सबसे बढ़कर, शिक्षा व्यक्ति के आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है और उन्हें जीवन में बहुत चीजों के बारे में जागरूक बनाती है। जब हम देश के नजरिए से बात करते हैं तो भी शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पढ़े-लिखे लोग देश के बेहतर उम्मीदवार को वोट देते हैं। यह किसी राष्ट्र की वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करता है। यह कहना कि शिक्षा आपकी सफलता का प्रवेश द्वार है, अतिशयोक्ति होगी। यह उस कुंजी के रूप में काम करता है जो कई दरवाजों को खोलेगी जो सफलता की ओर ले जाएगी। यह, बदले में, आपको अपने लिए बेहतर जीवन बनाने में मदद करेगी।

**समृद्धता**

जब हम समृद्ध वातावरण की बात करते हैं समृद्ध समाज की बात करते हैं तो नैतिक मूल्यों को भी साथ लेकर के हमें चलना पड़ेगा । नैतिक मूल्य इनके माध्यम से नैतिकता, कार्य की महानता, वीरता, आत्म त्याग और कर्तव्य के प्रति समर्पण इत्यादि गुणों का विकास होता है। ये नैतिक गुण हि सही क्रिया, सही आचरण और सही निर्णय की ओर निर्देशित करने वाले अनुभव के दीप का काम करते हैं। कहीं ना कहीं जिम्मेदारी की भावना, नमनीयता और समायोजन करने की योग्यता भी नैतिक गुणों का सूचक है।

**आर्थिक संरचना [6, 7, 8]**

आर्थिक आधारभूत संरचना का तात्पर्य है, वह सुविधा और सेवा जो किसी देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अंतर्गत देश में उपस्थित सेवाएँ यथा ऊर्जा, परिवहन, दूरसंचार, बैंकिंग प्रणाली इत्यादि आती हैं। किसी देश की आर्थिक उन्नति इनके विकास पर ही निर्भर करती है। जिस देश की आधारभूत संरचना जितनी विकसित होगी, उस देश की समृद्धि भी उसी के अनुपात में बढ़ेगी। शिक्षा के माध्यम से आर्थिक संरक्षण को बेहतर बनाने के लिए कई तरीके हो सकते हैं। यहाँ कुछ उपाय दिए गए हैं:

- **पेशेवर तैयारी:** शिक्षा के माध्यम से उचित और अच्छी नौकरियों की तैयारी करने से आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। विद्यार्थियों को उनके रुचि और क्षमताओं के अनुसार अध्ययन की गाइडेंस मिलनी चाहिए।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण:** योजनाओं के माध्यम से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने से छात्रों को आर्थिक स्वावलंबन और रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।
- **वित्तीय शिक्षा:** वित्तीय शिक्षा के माध्यम से छात्रों को निवेश, बचत, और उचित वित्तीय योजनाओं के बारे में जागरूक किया जा सकता है।

- **उद्यमिता की प्रोत्साहना:** शिक्षा के द्वारा उद्यमिता की प्रोत्साहना करने से छात्रों को नए व्यवसाय आधारित मुद्दों का समाधान खोजने में मदद मिल सकती है।
- **साक्षरता कार्यक्रम:** साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से जनसंख्या को साक्षरता का लाभ उठाने के लिए उत्साहित किया जा सकता है, जिससे उनका पूंजीगत विकास हो सकता है।
- **समाज में शिक्षा के महत्व का बढ़ावा:** समाज में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है, ताकि लोग शिक्षा के प्रति उत्साहित हों और अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए शिक्षा का सही उपयोग करें।

इन उपायों के माध्यम से शिक्षा को आर्थिक संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बनाया जा सकता है।

## संदर्भ


1. Harerimana JP. Equity vs equality: facilitating equity in the classroom. ResearchGate. Available from: https://www.researchgate.net/publication/352787017_Equity_Vs_Equality_Facilitating_Equity_in_the_Classroom
2. Kapur R. Importance of education in the lives of individuals. Department of Adult Education and Continuing Extension, Faculty of Social Sciences, University of Delhi. ResearchGate. Available from: https://www.researchgate.net/publication/369594594_Importance_of_Education_in_the_Lives_of_Individuals
3. Hatfield E, Salmon M, Rapson RL. Equity theory and social justice. Journal of Management, Spirituality & Religion. 2011;8(2):101-121. Available from: https://www.researchgate.net/publication/232542463_Equity_and_Social_Justice
4. The international forum for social development. Social justice in an open world: The role of the United Nations. Definition of social justice. United Nations. Available from: https://www.un.org/esa/socdev/documents/ifsd/SocialJustice.pdf
5. Dworkin R. What is equality? Part 1: Equality of welfare. Philosophy & Public Affairs. 1981;10(3):185-246. Available from: https://cedires.com/wp-content/uploads/2019/12/Dworkin_Ronald_Equality-of-Welfare_1981.pdf
6. McLaughlin E, Baker J. Equality, social justice and social welfare: A road map to the new egalitarianisms. Social Policy & Society. 2007;6(1):53-68. Available from: http://dx.doi.org/10.1017/S1474746406003393